खोया हुआ विश्वास

खोया हुआ विश्वास

● महेन्द्र सिंह 'सागर'

समदर्शी प्रकाशन
नव-सृजन के नवीन पृष्ठ...
दुकान नम्बर- पी-726, नजदीक फैंसी चौक, नेहरू रोड़, भिवानी, हरियाणा-127021

इस पुस्तक का कोई भी अंश, कहीं पर भी, बिना लेखक
की अनुमति के उद्धृत नहीं किया जाना चाहिए।

ISBN : **"978-93-88049-07-8"**

सर्वाधिकार © : महेन्द्र सिंह 'सागर'
Fateh kunj, HP petol pump ke samne,
kaunt road, Bhiwani-127021

मूल्य : ₹275/-

प्रथम संस्करण : जून, 2018

प्रकाशक : समदर्शी प्रकाशन,
दुकान नम्बर- पी-726,
नजदीक फैंसी चौक, नेहरू रोड़,
भिवानी, हरियाणा-127021
मोबाइल नं: 9599323508
Website: www.samdarshiprakashan.com
Email: samdarshi.prakashan@gmail.com

आवरण एवं पुस्तक सज्जा : 'समदर्शी'

मुद्रक : एस पी कौशिक एंटरप्राइजेज, दिल्ली

Khoya Huaa Vishwas Novel written By- Mahender Singh 'Sagar'
₹275/-

समर्पण

स्वर्गीय मामा जी
श्री रामकुमार जी की चिर
स्मृति में

उपन्यास से पहले

'विश्वास और धोखा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं' यह बात मैं बचपन से ही आदरणीय पिताजी से सुनता आया हूँ और विद्यार्थी जीवन के दौरान भी अक्सर मित्रों से सुनता रहा हूँ, 'क्या मुझ पर विश्वास नहीं है'; क्यों बोलने पड़ते हैं हमें ऐसे शब्द। जिन्हें बोलने से पहले हमारा विश्वास डगमगाया होता है। आख़िर, क्यों मजबूर होते हैं हम। बस इसी आधार पर लिखा है प्रस्तुत उपन्यास। यथार्थ और कल्पना का मिश्रण यह उपन्यास हमारे आम जीवन की उन परतों का चित्रण करता है जो निरन्तर हमारे विश्वास का गला रेतने का काम करती हैं। इसके बावजूद हम उनसे दूर नहीं जा पाते हैं।

उपन्यास का ताना-बाना एक हत्या के कारण उत्पन्न परिस्थितियों के इर्द-गिर्द घूमता है। कहानी का जो पात्र जितना अधिक विश्वसनीय प्रतीत होता है वह उतना ही घिनौना विश्वासघात करता है। हत्या का आरोप उपन्यास के नायक पर लगता है। वह इन्साफ के मंदिर में सच्चाई की जीत का इंतज़ार करता रहता है किन्तु भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी यह व्यवस्था उसे बाहर नहीं आने देती। उधर उसके विश्वसनीय साथी ही उसका साथ छोड़ देते हैं तो दूसरी तरफ उसका परिवार छल, प्रपंच, वासना और लोभ के अंधकार में छटपटाता दिखाई देता है। कुल मिला कर पूरी कहानी हमें कहीं न कहीं समाज की विद्रुपताओं पर विचार करने के लिए बाध्य अवश्य करती है। मन में उठते ज्वार-भाटे के झंझावत के बीच विश्वास हंताओं की कहानी है यह।

इसे लिखते हुए मुझे आभास हुआ कि आदमी अपने फ़ायदे के लिए परिस्थितियों की गुलामी को स्वीकार कर लेता है। दोस्ती और विश्वास जैसे शब्द महज़ दिलासा देने के लिए बने हैं। यदि सत्य है तो, वह है हमारा स्वार्थ। लिखते हुए कई बार मुझे एहसास हुआ कि इस कथानक ने दुनिया के सामने आने के लिए मुझे मोहरा बनाया है। मैंने जिस धरातल पर इसकी शुरूआत की थी यह उस पर नहीं रहा। कहने को उपन्यास का फलक विस्तृत होता है; जिसमें लेखक को पूरी स्वतंत्रता होती है कि वह अपने पात्रों को साध सके; परन्तु इसके पात्रों ने अपने लिए एक अलग ही आसमान खोज लिया। जिसमें ये स्वतंत्र होकर उड़ान भरते रहे और मैं, कहने भर को इसका लेखक

रह गया। इसे लिखते समय मुझे महसूस हुआ कि यह रचना कहीं से अवतरित हो रही है। इस कारण मेरा खुद से विश्वास डगमगा गया। शायद आपकी सार्थक टिप्पणियाँ मुझे संबल प्रदान करें।

उपन्यास लिखते समय बहुत धैर्य की आवश्यकता होती हैं। इस दौरान मेरा धैर्य बनाए रखने के लिए मैं अपने अजीज डॉ मनोज भारत, विकास यशकीर्ति और विनोद आचार्य का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ। इस दौरान इनका सहयोग मुझे निरंतर मिलता रहा। जिसके बारे में सोच कर मुझे लगता है कि उपन्यास के पात्रों जैसी ही दुनिया नहीं होती। इसे पुस्तक रूप में आपके समक्ष लाने वाले योगेश समदर्शी जी का आभार न किया जाए तो मेरा आभार ज्ञापन अधूरा रहता।

अंत में एक विश्वास वाक्य के साथ में अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा- मुझे विश्वास है कि मेरा 'खोया हुआ विश्वास' आपके दिल में मेरे लेखन के प्रति और अधिक विश्वास पैदा करेगा।

इसी आशा और विश्वास के साथ।

आपका अपना

-महेन्द्र सिंह 'सागर'

1.

दिनभर की यात्रा के बाद सूरज अस्तांचल की ओर बढ़ने लगा। पक्षियों ने बसेरों की टोह लेनी आरम्भ कर दी। गरम हवाएँ ठंडी होने के कारण मौसम खुशनुमा हो गया। सुहावने मौसम से खुश होकर पक्षी संध्या-वंदन करने लगे। चुनाव की तपिस के कारण लोगों को मौसम की ठंडक का आभास नहीं हुआ। न ही उन्हें पक्षियों की चहचाहट सुनाई दी। बस, अपनी धुन में एक-दूसरे से बतियाने में मशगूल रहे। आदमियों की चक-चक और पक्षियों की चहचाहट ऐसा आभास देने लगी, जैसे दोनों के बीच में ज़्यादा बोलने की होड़ लगी हो। उनके जोश से घबराकर सूरज क्षितिज की ओट में छुपने लगा। अंधकार चारों ओर अपने साम्राज्य का विस्तार करने लगा। पक्षियों ने हार मान ली। वे नींद के आगोश में सोने का प्रयास करने लगे, परन्तु लोगों की बक-बक ने उन्हें यह सुख नहीं लेने दिया। वे एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक परेशान हो घूमते रहे। विद्यालय की बड़ी-बड़ी लाइटों ने अँधेरे को पास नहीं फटकने दिया। प्रशासनिक अमला अपने कार्य को मुस्तैदी से पूर्ण करने में लगा रहा। वोट डालने के बाद लोग अगले पाँच साल के लिए बनने वाली गाँव की सरकार के प्रतिनिधियों के नामों की घोषणा का इंतज़ार करने लगे। इस बार गाँव में चुनाव हाई-फाई तरीके से लड़ा गया। दो कैंडिडेट में सीधा मुकाबला होने के कारण पूरा गाँव दो धड़ों में बट गया। जीत के लिए एक-एक वोट का महत्त्व बढ़ गया। गाँव का भाईचारा लगभग समाप्त हो गया। पिछले एक महीने से लोगों में रंजिश बढ़ती गई। आज यह रंजिश चरम पर...। दिन में दो बार झगड़ा भी हुआ। लोकतंत्र में लोगों का मेल-मिलाप भी दलीय आधार पर होने लगा।

उत्तर हरियाणा में भाखड़ा कनाल के तट पर बसे दूर-दराज के इस गाँव में एक मास से लोगों को अपने पाले में करने के सभी तरह के हथकंडे अपनाए गए। साम, दाम, दंड, भेद की सारी नीतियाँ इस गाँव के लिए प्रतीत होने लगी। एक-एक वोट के

लिए मार-काट मची रही। ग़रीबों के मोल-भाव लगाए गए। शराबियों को शराब पिलाई गई। जो इनसे भी नहीं टूटे, उनके लिए शहर से लड़कियाँ बुलाई गई। भारी उठा-पटक के बीच आख़िर मतदान का दिन आ पहुँचा। गाँव की वर्तमान दशा से परेशान होकर दयाकिशन सोचने लगा, 'आज दुनिया के अधिकतर देशों में लोकतंत्र हैं। शासन की इस व्यवस्था को उत्तम माना गया है लेकिन भाईचारा समाप्त करने वाली यह प्रणाली अच्छी कैसे हो सकती है? यह समाज के लिए घातक है। हमारे छोटे-से गाँव में द्वेष की खाई बहुत गहरी हो गई है। इसे पाटने में वर्षों लग जाएंगे। तब तक अगला चुनाव आ जाएगा। इस प्रकार गाँव का भाईचारा सदा के लिए नष्ट हो गया है। कल तक जो लोग आपस में हँस-हँसकर मिलते रहे हैं। आज एक-दूसरे से मुँह फेरकर निकलते हैं। आख़िर इतनी रंजिश क्यों? लोग पंच-सरपंच का चुनाव मिल बैठकर भी तो कर सकते हैं। रंजिश से किसका भला होगा? कहते हैं, लोकतंत्र शासन की सर्वोत्तम पद्धति है। इसके द्वारा लोग योग्य व्यक्तियों का चयन करते हैं। परंतु ऐसा होता नहीं। पैसे के दम पर अपराधी तक चयनित हो जाते हैं। लोग योग्य व्यक्तियों के स्थान पर अपने स्वार्थ का चयन करते हैं। मन में प्यार के स्थान पर रंजिशों का जमावड़ा हो गया है। आख़िर यह लोकतंत्र किसका भला करेगा? कौन है जो हमें लड़वा रहा है? हमारा लालच क्या है? किस कारण यह सब हो रहा है?' दयाकिशन सोचते-सोचते परेशान हो गया, परंतु उसे इन सवालों का जवाब नहीं मिला।

दूसरे ही पल वह सोचने लगा, 'क्या रंजिश बढ़ाने में उसका योगदान कम है? वह अपने दल के व्यक्ति को जिताने के लिए दिन-रात एक किए हुए था। रात के अंधेरे में वह छुप-छुपकर विरोधी दल के लोगों के घरों में जाया करता। उसे इस बात का भय सदा बना रहता, यदि किसी विरोधी पक्ष के कार्यकर्ता ने उसे देख लिया तो, उसकी खैर नहीं। शायद उसे इतना मारा जाता कि उसकी हड्डी-पसली टूट जाती। लेकिन पता नहीं क्या धुन सवार हो गई, वह अपने उम्मीदवार को जिताने के लिए जान की परवाह न करते हुए; रातों में एक-एक वोट के लिए घूमता रहा। आज उस मेहनत का फल मिलने का दिन है। वह आज भी एक-एक वोट को तलाश करता रहा। सारा दिन केवल चाय के सहारे। रोटी खाने के लिए भी समय नहीं मिला। थकावट अब बर्दाश्त से बाहर होने लगी। आराम की चाहत होने के बावजूद, एक सच्चे कार्यकर्ता की भाँति, आराम हराम है के सिद्धांत को मानते हुए वह परिणाम के इंतज़ार में विद्यालय में ही डटा रहा।

गाँव का यह सरकारी विद्यालय आस-पास के गाँवों में सबसे सुंदर विद्यालयों की श्रेणी में शामिल हैं। आज इसकी सुंदरता को लोगों ने ग्रहण लगा दिया। चारों ओर प्लास्टिक के कप-गिलास बिखरे पड़े हैं। पार्क के फूलों को बच्चों द्वारा तोड़ दिया गया। बगीचों को लोगों ने जूतों से रौंद दिया। आज विद्यालय की सुन्दरता किसी कोने में बैठी रो रही है लेकिन उसके आँसू देखने की फुर्सत किसी के पास नहीं है। अन्य दिन प्राचार्य महोदय के आदेशानुसार, किसी बच्चे या अध्यापक को पार्क में जाना होता तो वह नंगे पैर प्रवेश करता। इसके दो फायदे थे, एक घास को चोट नहीं लगती; उसकी

ताज़गी बरकरार रहती। दूसरा, नंगे पैर घास पर चलने से नेत्र ज्योति को लाभ पहुँचता।

आज गाँव में उस सरकार के चयन की प्रक्रिया चल रही है, जो गाँव में विकास कार्य अगले पाँच वर्षों तक करवाएगी। कहते हैं, पूत के पैर पालने में ही दिख जाते हैं। इस सरकार ने अपने जन्म की प्रक्रिया में ही विद्यालय के अनुशासन को भंग कर दिया। उसकी सुंदरता को कई दिनों का ग्रहण लगा दिया। स्वच्छता का नारा देकर सरपंच बनेगा, क्योंकि दोनों ने ही स्वच्छ गाँव, स्वच्छ भारत का नारा दे रखा है। दोनों दलों के लोगों ने आज गाँव के विद्यालय को बदसूरत बना दिया। जिसका आग़ाज़ बुराई के साथ हो, उससे अच्छाई की उम्मीद कैसे की जा सकती है?

नहीं-नहीं ऐसा नहीं है। हमारा उम्मीदवार बहुत अच्छा है। नेक दिल इंसान है। वह ग़रीबों का भला चाहने वाला एक सच्चा हमदर्द है। विरोधी दल का उम्मीदवार अमीर घराने से और अमीरी का रौब दिखाने वाला है। ग़रीबों का भला ग़रीब ही कर सकता है। वैसे दोनों अपनी-अपनी योजनाओं पर अंत तक अडिग नहीं रह पाए। आदमी का सामान्य स्वभाव है कि उसे जो अच्छा लगता है, वह वही करता है। इसी कारण से आज इनका लक्ष्य है, चुनाव जीतना। जीतने के लिए वोटरों की गलतियों को अनदेखा करना इनकी मजबूरी है। जीतने के बाद हमारा उम्मीदवार निश्चित रुप से विद्यालय व गाँव को संभालने के लिए अपना पूर्ण योगदान...।

मुझे अपने ही किए पर विश्वास नहीं हो रहा। गाँव का भाईचारा बिगड़ चुका है। लोगों के मन में कितना ज़हर भरा गया है। वोट की आग ने लोगों के दिलों के अंदर नफ़रत का दावानल दहका दिया है। दो बार तो आज ही तू-तू मैं-मैं हो चुकी। जिस कारण मतदान देर तक रुका रहा। यदि रुकता नहीं तो मतदान पाँच बजे समाप्त हो जाता, रात के आठ नहीं बजते । खैर, अब तो मतदान प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है। जल्दी ही परिणाम घोषित हो जाएगा। आजकल वोटिंग मशीन ने काउंटिंग को आसान बना दिया है। जिस कारण परिणाम जल्दी आ जाते हैं। वरना आज की सारी रात यही विद्यालय में गुजरती...।'

दयाकिशन के विचारों की नदी पर बाँध बनकर रामसिंह उसके पास आया और कहने लगा, ''भाई आज तो दिलवा दे। तेरे उम्मीदवार को ही मैंने वोट दिया है। जिस उम्मीदवार की अब तक पी रहा था उसे पता चल गया है कि मैंने एक मास तक उसकी शराब पीने के बाद भी वोट नहीं दिया। मुझे डर है कि वह मुझसे झगड़ा न कर ले। तुम मुझे शराब दिलवा दो तो, मैं घर चला जाऊँ।''

''आदमी दूसरों के पैसों से लत लगाता है। परंतु उसे पूरा खुद के पैसों से करना होता है। मैं चाहता हूँ, तुम आज से नशा छोड़ दो।'' दयाकिशन ने रामसिंह को समझाने का प्रयास किया।

''मुझे प्रवचन देने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुमसे भीख नहीं मांगने आया हूँ। मैं अपने वोट की कीमत चाहता हूँ।''

''वोट अनमोल होता है। उसकी एक बोतल कीमत क्यूँ लगाते हो।''

''ज़्यादा दिला दो।''

''तुम मेरी बात समझते क्यों नहीं?''

''मुझे ज़्यादा बहकाने की ज़रूरत नहीं है। दिलाते हो तो दिला दो, वरना आज के बाद मुझसे कभी बात मत करना।'' रामसिंह ने दयाकिशन से नाराज़ होते हुए कहा।

''मित्र! यदि हमारी दोस्ती शराब से ही चलनी है तो, मुझे तुम्हारी दोस्ती नहीं चाहिए।'' दयाकिशन ने जैसे को तैसा जवाब देते हुए कहा, ''तुम्हें शराब दिलवा सकता हूँ परंतु दोस्ती की शर्त पर नहीं।''

''अरे! नाराज़ क्यों होता है। मैं तो मज़ाक़ कर रहा हूँ। क्या तू नहीं जानता शराब मेरी कमज़ोरी है? मुझे हर रोज शराब चाहिए। मैं इसे कम करने का प्रयास कर रहा था लेकिन चुनाव ने इस लत को और बढ़ा दिया। अब तुम ही बताओ, अचानक क्या शराब छुट सकती है? मेरा विश्वास करो, मैं धीरे-धीरे इसे छोड़ने का प्रयास करूँगा। मुझे तुम्हारी यही बात पसंद आई थी कि जो व्यक्ति हमें नशे का आदी बना रहा हो; हम उसे वोट क्यों दें? यही कारण है, मैंने एक महीने से जिस व्यक्ति की शराब पी, उसे वोट नहीं दिया। देख लेना वह मेरे वोट के कारण आज हारेगा।''

''भगवान करे ऐसा हो।'' दयाकिशन बोला और अपने पास खड़े एक व्यक्ति से कहा, ''सुनो! रामसिंह को एक बोतल दे दो।'' उसने दयाकिशन को घूर कर देखा जैसे कह रहा हो कि यह हमारा वोटर नहीं है। परंतु जब दयाकिशन ने पुनः कहा, ''इसे बोतल दे दो।'' तब उसने अपने अड़से में दबी हुई बोतल निकाल कर दे दी।

रामसिंह ने तुरंत उसे अपने अड़से में दबा लिया और बोला, ''दया किशन भाई तुम बहुत अच्छे हो। कोई हारे, कोई जीते; हम दोस्त हैं और दोस्त रहेंगे। अच्छा, मैं चलता हूँ। मेरे अंदर के कीड़े मुझे यहाँ रुकने नहीं दे रहे हैं।''

''क्या कह रहे हैं तुम्हारे कीड़े?'' दया किशन ने हँसते हुए पूछा।

रामसिंह हाथ को जोश के साथ ऊपर उठाते हुए बोला, ''हमारी मांगे पूरी करो, हमारी मांगे पूरी करो।'' इस तरह दो बार कहकर वह उसकी ओर मुस्कुरा दिया और घर की ओर चल पड़ा।

उसके जाने के बाद दया किशन ने देखा पुलिस लोगों को विद्यालय के गेट से बाहर निकाल रही है और कह रही है, ''सभी विद्यालय से बाहर निकल जाएँ। थोड़ी देर में विद्यालय के गेट पर परिणाम सुनाया जाएगा।'' कुछ व्यक्ति कहने से बाहर की तरफ चल पड़े परंतु कुछ को बाहर निकालने के लिए पुलिसकर्मियों को हल्का-सा बल प्रयोग करना पड़ा और उनको धक्का मारते हुए विद्यालय के गेट से बाहर निकाल दिया। शीघ्र ही सारा स्कूल खाली-खाली नज़र आने लगा। अब विद्यालय के प्रांगण में कुछ पुलिसकर्मियों को छोड़कर कोई नहीं था। सभी को बाहर निकालने के बाद उन्होंने विद्यालय का मुख्य गेट बंद कर दिया।

बाहर खड़े-खड़े जब काफी देर हो गई तो दया किशन का मन घर जाने को हुआ परंतु निर्णय सुने बगैर, उसके कदमों ने साथ देने से इन्कार कर दिया। वह अनमना-सा

घर की तरफ मुड़ ही रहा था कि उसने देखा पोलिंग बूथ का दरवाजा खुल रहा है और विद्यालय के अंदर से पुलिस कर्मियों के साथ एक व्यक्ति हाथ में कागज लिए गेट की ओर आ रहा है। साथ में दोनों उम्मीदवारों के एजेंट थे। उन्हें देखकर लोगों की खुसर-फुसर आरंभ हो गई। दयाकिशन उस ओर ध्यान न देकर ऑफिसर द्वारा की गई घोषणाओं को सुनने लगा। जिसके अनुसार उसका उम्मीदवार बारह वोटों से हार गया। उसका रहा-सहा सत जाता रहा। वह वहीं पर बैठ गया।

विजेता दल के लोग खुशी से नाचने लगे परंतु विजेता उम्मीद्वार, जिसे अब सरपंच कहना ठीक होगा ने तुरंत उन्हें हुड़दंग मचाने से रोक दिया। उसने घोषणा की, विजय जुलूस नहीं निकाला जाएगा। ''भाइयों! घर जाने से पहले मैं दो शब्द कहना चाहता हूँ। आशा है, मेरे दो शब्द सुनने के लिए थोड़ी देर शांति बनाए रखेंगे।''

यह सुनकर दयाकिशन के घर की तरफ बढ़ते कदम अचानक रुक गए।

नया सरपंच कहने लगा, ''मेरे आदरणीय बुजुर्गो, प्यारे भाइयों और नौजवानों, आप सब ने मुझे इस गाँव के विकास के लिए चुना है। चुनाव में हमने अपने-अपने उम्मीदवार को जिताने के लिए जी तोड़ मेहनत की है लेकिन अब वह निर्णय हो चुका है। मैं अगले पाँच वर्ष तक आपका सेवक बनकर सेवा करूँगा। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि कभी भी वोट कि रंजिश मन में नहीं रखूँगा। जीतने के बाद मैं सभी का सरपंच हूँ और सबको एक नज़र से देखूंगा। जिस भाई को भी मेरी आवश्यकता हो मुझे निःसंकोच कहना। इस बात का ख़्याल कभी मन में मत लाना कि आपने मुझे वोट दिया या नहीं दिया। इन बातों को हमें आज यहीं भुला देना है। मैं चाहता हूँ, गाँव के लोग भाईचारे से रहें। कल मेरे घर में आप सभी के लिए सामूहिक भोज हैं। आप कल दोपहर के खाने पर, मेरे घर सपरिवार आमंत्रित हैं। यह भावना आपके मन में नहीं आनी चाहिए कि आपने मुझे वोट दिया या नहीं। यह निमंत्रण आपके गाँव के सरपंच की ओर से है। आपका भी फ़र्ज़ बनता है कि आप मुझे सच्चे मन से अपना प्रतिनिधि स्वीकार करें और कल के भोज में ज़रूर पहुँचे।

मेरा सबसे हाथ जोड़ कर निवेदन है कि अब घर जाए। आराम से सोए। किसी तरह की भी हुल्लड़बाजी न करें। यदि हम ढोल-नगाड़ों के साथ गलियों में घूमेंगे तो हारने वाले उम्मीदवार के समर्थकों के मन को ठेस लगेगी। मुखिया के नाते मेरा फ़र्ज़ बनता है कि गाँव में कोई भी मेरे कारण दुःखी न हो।''

घर जाते हुए दयाकिशन सोचने लगा, 'जिस व्यक्ति को मैं पानी पी-पी कर कोसता था वह नेक इंसान है। जो गाँव में भाईचारा बनाए रखना चाहता है। आज हमारा उम्मीदवार जीतता तो हम सारी रात गली-गली में नाच कर गुजार देते। विरोधियों की फिक्र हम नहीं करते। सभी लोगों को एक मंच पर लाने के लिए कल भोज का आयोजन, सार्थक कदम है। निश्चित रूप से इस सरपंच के नेतृत्व में गाँव उन्नति करेगा।'

दूसरे दिन दयाकिशन निर्मला और पायल के साथ नए सरपंच की पार्टी में पहुँचा। सरपंच ने सभी का हँसकर स्वागत किया और कहा, ''आओ-आओ, तुम्हारा स्वागत

है।''

उसने भी सरपंच को जीतने की बधाई दी। पायल ने नमस्ते की तथा निर्मला ने चरण छूकर आशीर्वाद लिया। तत्पश्चात उन्होंने फूलों का गुलदस्ता भेंट किया। सरपंच ने वह लेकर अपने पीछे खड़े एक व्यक्ति को पकड़ा दिया और कहा, ''इसकी क्या ज़रूरत थी। बेकार ही तुमने शहर जाने-आने की मेहनत की। आदमी का प्यार मन में बसता है, दिखावे की वस्तुओं में नहीं।''

''आपके भाईचारा बढ़ाने के कार्य में सहयोग देना हमारा भी फ़र्ज़ है। खाली हाथ आना हमें सही नहीं लगा, बस इसलिए यह तुच्छ...।''

''ठीक है। आओ, भोजन कर लो फिर बातें करेंगे।'' उन्हें भोजन वाले स्थान पर छोड़ वह वापस गेट पर आ गया।

अंदर उन्होंने देखा कि उन्होंने जिस दल का समर्थन किया था उनमें से कोई नहीं आया। यह देख कर उसे अपने फैसले पर दुःख हुआ। उसे दल से अलग नहीं चलना चाहिए। उस जैसे सक्रिय कार्यकर्ता पर दल बदलने का ठप्पा ठीक नहीं। दूसरे पल उसने सोचा, 'दल अपनी जगह है लेकिन गाँव के विकास के लिए वर्तमान सरपंच को मेरी आवश्यकता हो तो मुझे तत्पर रहना चाहिए।'

खाना खाते हुए वह जिस व्यक्ति के नज़दीक जाकर खड़ा होता वही उससे दूर हट जाता। सब उसे अनजान की तरह घूरने लगे। उनका इस तरह घूरना उससे सहन नहीं हुआ और वे वहाँ से बिना खाए ही निकल लिए। बाहर निकलते हुए उन्हें सरपंच ने रोक कर पूछा, ''खाना नहीं खाया?''

''सरपंच साहब जितनी भूख थी उतना खा लिया। गाँव में मेलजोल बढ़ाने का आपका निर्णय वास्तव में क़ाबिल-ए-तारीफ़ है। शायद हमारे दल को आपका फैसला रास नहीं आया इसीलिए कोई नहीं पहुँचा।''

''कोई बात नहीं। आपने शुरूआत कर दी है। हमारे मन में कोई मैल...।''

''मैं आपकी सोच से प्रभावित हूँ। आपको जहाँ मेरे पसीने की ज़रूरत होगी, मैं वहाँ खून बहा दूंगा।''

''हम आपकी भावनाओं की कद्र करते हैं। आप यहाँ आए यही हमारे लिए बड़ी बात है। मैं लोगों के मन से चुनावी रंजिश निकालना चाहता हूँ, इस कार्य में तुम मेरी मदद करो।''

''जी, इस कोशिश में मैं आज से ही लग जाता हूँ।''

''हमें आपसे यही आशा है।''

घर आते हुए दयाकिशन ने निर्मला से पूछा, ''हमने सरपंच की पार्टी में जाकर कोई ग़लती तो नहीं की?''

''नहीं, रंजिश को ख़त्म करना कभी ग़लत नहीं होता। अच्छे कार्य को पसंद न पसंद के तराजू में नहीं तोलना चाहिए। वैसे भी गाँव के दो सरपंच नहीं हो सकते। चुनाव के बाद, लोगों को एक होना ही चाहिए।''

''पापा! भाईचारा एक से नहीं निभता है। इसके लिए कोशिश दोनों तरफ से होनी चाहिए। यूँ भी मन का मैल कपड़ो की तरह आसानी से नहीं निकलता है। समय लगता है। लोगों को समझाना पड़ता है।'' पायल ने चर्चा में शामिल होते हुए अपना मत रखा।

''ठीक कहा मेरी लाड़ली। मैं लोगों को समझाऊंगा।''

पवित्र कार्य मानकर दयाकिशन लोगों को बैर-भाव भुलाने की सलाह देने लगा। यहाँ तक की अपने हारे हुए उम्मीदवार को भी उसने समझाने में गुरेज नहीं किया। वह कहता, 'बैर-भाव किसी का भला नहीं करता है। हमें मन की रंजिश को भूलकर अगले पाँच वर्ष तक सरपंच की अच्छी नीतियों का समर्थन और ग़लत कार्यों का विरोध करना चाहिए।'

उनके दल के लोगों पर इसका उल्टा असर हुआ। उन्होंने दयाकिशन को दल-बदलू समझ लिया।

●●●

2.

सूरज के अपने विश्राम स्थल पर पहुँचने से पूर्व सबको अपने-अपने घर पहुँचने की जल्दी हो जाती है। आज चौदहवीं का चाँद अँधेरा होने से पूर्व ही अपनी चाँदनी के साथ आ गया। वातावरण में एक अजीब-सी ख़ामोशी छाने लगी। इसे तोड़ने की पक्षियों ने बहुत कोशिश की परन्तु असफल रहे। अँधेरे का भय न होने के बावजूद राम सिंह ने अपने पिता मान सिंह से कहा, ''बाकी निराई कल कर लेंगे। अब घर चलें?''

''थोड़ा-सा बचा हुआ है, आज ही समेट देते हैं।'' मान सिंह ने कहा।

''साँझ के समय सब सुकून के लिए घर जा रहे हैं। देखो, आकाश भी घर जाते पक्षियों से अटा पड़ा है।''

''ठीक है, रहने दे भाषणबाजी को। मुझे पता है तुझे कौन-से घर जाने की जल्दी है? एक हुक्का पी लूँ, तब तक तू कसोले कमरे में रख आ।'' मान सिंह ने कहा।

रामसिंह बिना कुछ कहे कसोले रखने चला गया। मानसिंह ने हुक्के को गुड़गुडाया ही था, तभी भेड़-बकरियों के रेवड़ के पीछे चलते भोलू गड़रिये ने तेज आवाज में कहा, ''मानसिंह भाई! राम-राम।''

''राम-राम भाई, राम-राम। आ ज्या, होका पी ले।''

''ईबै कोन्या रुक सकूँ। ईब इन नै अपने बच्या की याद आ री सै। ईब डाटे तै भी कोन्या डटंगी।'' भेड़-बकरियों की ओर हाथ करते हुए भोलू गडरिये ने कहा।

'संसार का हर जीव अपनी संतान को कितना प्यार करता है? उसके प्यार में वह भूख-प्यास को भी भूल जाता है। घर जाते जीवों के पैरों में कितनी तेजी है। वास्तव में घर, घर ही होता है। उसमें आराम करने से बढ़कर कोई सुख नहीं...।'

''चाचा! राम-राम।'' मानसिंह की सोच में बाधा बनते हुए दयाकिशन ने कहा।

''राम-राम भाई, राम-राम। आज यहाँ कैसे आना हुआ?'' मानसिंह ने दयाकिशन से पूछा।

''बस यूँ ही, रामसिंह से मिलने आया हूँ।''

''झूठ, सरासर झूठ। इतनी दूर तेरे जैसा समझदार बिना काम नहीं आ...।''

''दयाकिशन भाई! कैसे आना हुआ?'' रामसिंह ने उनके पास आकर पूछा।

''जयराम की बात याद नहीं है क्या?'' दयाकिशन ने उसकी आँखों में झाँकते हुए कहा।

उसका इशारा समझकर रामसिंह ने कहा, बापू! तू चल मैं थोड़ी देर में आता हूँ।''

''ठीक है, जल्दी आ जाना।'' मानसिंह वहाँ से चला जाता है।

थोड़ी देर में वहाँ जयराम और कालूराम आ जाते हैं। चाँद पूरे शबाब पर चमकने लगता है। शांति इतनी बढ़ जाती है कि नहर के बहते पानी की आवाज भी स्पष्ट सुनाई देने लगती है। उस असीम शांति को भंग करने के लिए चार मित्र वहाँ बैठकर शराब पीते हुए बतियाने लगे। ''जयराम! भगवान जब देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है। कितने दिनों तक तुझे औलाद नहीं हुई। होने लगी तो, दो साल में बेटा-बेटी दोनों दे दिए। भगवान ने देर से सही परंतु अच्छा काम किया है। 'भगवान के घर देर है अंधेर नहीं' ये किसी ने अच्छी तरह जाँच-परख के बाद ही कहा है। मेरी आज भगवान में पहले से ज़्यादा आस्था हो गई है। अपनी मित्र-मंडली में तुम ही संतान के सुख से महरूम थे। इस कारण जब बच्चों की बात होती थी, तुम उदास हो जाते थे। देख लेना दोस्त वह तुम्हारी तरह दिलदार बनेगा। कंजूसी सदा उससे दूर भागती फिरेगी। वह भी यारों का यार होगा।''दयाकिशन ने पैग हाथ में उठाते हुए कहा।

''ठीक कहा, दयाकिशन तूने। मेरे यार का पुत्र बड़ा होकर सेठ बनेगा, दानी सेठ कहलायेगा। हमारे दानवीर सेठ को ग़रीबी कभी छू नहीं पाएगी। देख लेना, वह तेरा खूब नाम रोशन करेगा। वह भी तुम्हारी तरह हमें खूब पार्टी दिया करेगा।'' कालूराम ने पैग में उँगली डुबोकर छिटकते हुए कहा।

''कर दी न मूर्खों वाली बात। हम भतीजे से पार्टी लेंगे? कभी तो अक्ल से काम लिया कर।'' दयाकिशन ने कालूराम को समझाते हुए कहा।

''हाँ भई, हो गई ग़लती। भूल गया था, वह हमारा बेटा है। बेटे के साथ हम शराब नहीं पीयेंगे। उसे हम बुरी लतों से दूर रखने का प्रयास करेंगे।'' कालूराम ने अपनी ग़लती स्वीकारते हुए कहा।

''भगवान पर भरोसा रखो। वह हमारी संतानों को बुरी लत नहीं लगने देगा।'' दयाकिशन हाथ जोड़कर आसमान की ओर देखने लगा। शायद वह भगवान से प्रार्थना कर रहा था।

''ये कैसी बातें कर रहे हो? भविष्य किसने देखा है? जो होगा देखा जायेगा? आज तो कम-से-कम पार्टी का आनन्द ले लो।'' जयराम ने उन्हें समझाते हुए कहा।

''सही कहा तुमने; परंतु हमारे भतीजे के लिए अच्छी दुआ करना हमारा फ़र्ज़ है। कौन जानता है किस वक्त जिह्वा पर सरस्वती विराजमान होकर भविष्य का सच हमारे मुख से कहलवा दे?'' दयाकिशन ने अपने आप को सही साबित करने के लिए कहा।

''मेरे हलक में जब तक दो पैग न चले जाएँ, तब तक अपने से सरस्वती रुष्ट रहती है। लाख कोशिश करने के बाद भी शब्द निकल नहीं पाते हैं। क्या मैं अपने भतीजे के लिए कुछ न कहूँ?'' रामसिंह ने एक तरह से अपने मित्रों पर दोषारोपण करते हुए कहा।

''तुम भी अपने मन के उद्गार व्यक्त कर लो।'' जयराम ने हँसते हुए कहा।

''क्या खाक कर लो?'' कहते हुए रामसिंह उन्हें प्रश्नसूचक नज़रों से देखने लगा।

रामसिंह के भाव को समझने के बावजूद जयराम ने हँसते हुए पूछा, ''पहेलियाँ मत बुझाओ? जो कहना है, साफ-साफ कहो।''

''यार! एक पटियाला पैग बना दे। इस छोटे से पैग से मेरा क्या होगा? तुम सबको पता है, बिना पीये मेरी रगों का खून जम जाता है।'' रामसिंह ने याचक भाव से कहा।

''ला, तेरा गिलास दे। हमारे दूसरे पैग से पहले तेरा पटियाला पैग बना देते हैं।'' कहते हुए जयराम ने रामसिंह के गिलास को शराब से आधा भर दिया। रामसिंह ने उसे पानी मिलाये बिना ही एक साँस में खाली कर दिया।

''ओए खोत्ते! इसमें पानी तो मिला लेता, मरेगा क्या? बिना पानी के यह गुर्दों को ख़राब कर देती है। अपना नहीं तो बच्चों का ख़्याल कर लिया कर।'' दयाकिशन ने उसे डाँटते हुए कहा।

''इस लोभी जयराम ने जरा-सी डाली थी। उससे क्या खाक ख़राब होंगे। दो पैग शराब तो दवाई का काम करती है। ये तुम हमेशा कहते हो। आज यह गुर्दे ख़राब करने वाली हो गई। हम तुम्हें समझदार मानते हैं और तुम हो कि अपनी बात से पलट जाते हो।'' रामसिंह ने नाराज़ होते हुए कहा।

''आज का दिन नाराज़ होने का नहीं है। ऐसे शुभ दिन, वर्षों इंतज़ार के बाद आते हैं। जितना जी चाहे, पी ले। हम यहाँ खुशी साझा करने के लिए...।''

कालूराम की बात पर ध्यान न देते हुए दयाकिशन ने जयराम के हाथ से बोतल लेकर रामसिंह की ओर करते हुए कहा, ''जितनी पीना चाहे, पी ले, बस तू...।''

अगले शब्द दयाकिशन के मुख से बाहर निकलते उससे पहले रामसिंह ने उसके हाथ से बोतल झटक ली और गट-गट करके पीने लगा। आधी बोतल खाली करने के बाद, एक जोरदार डकार लेते हुए बोला, ''अब गला और आत्मा दोनों तर हो गए हैं। भगवान हमारे भतीजे को लम्बी उम्र प्रदान करे। वह पढ़ाई में अव्वल रहे। जयराम! वह तेरा व तेरे कुल का खूब नाम रोशन करेगा। हमारा भतीजा कोहिनूर की तरह अपनी चमक से तेरे कुल को सदा...।''

''बस कर, सारे आशीष आज ही देगा क्या? कुछ कल के लिए भी बचा कर रख ले। अब पार्टी का मजा ले।'' दयाकिशन ने हँसते हुए कहा।

''हाँ-हाँ, जयराम अब सबके पैग बना दे। देख, मुझे छोड़ मत देना, मेरा भी सबके साथ बनाना।'' रामसिंह ने अपना खाली गिलास उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा।

जयराम सबके पैग बना कर देता है। सब अपने-अपने पैग में पानी मिलाने लगते हैं। जब रामसिंह ने पानी मिलाने के लिए जग उठाया तो कालूराम बोला, ''तुझे भी पानी

याद आ गया, तू तो शेर है। शेर बिना पानी के ही पीते हैं।''

''बात तेरी ठीक है, लेकिन महफिल में सबके बराबर रहना चाहिए। अलग चलने से लोग बुरा मान जाते हैं। क्या मैं तुम लोगों को नाराज़ कर दूँ?''रामसिंह नशे में झूलते हुए तुतला कर बोला।

चारों एक साथ हँसने लगे और जाम से जाम टकरा कर बोले, ''चियर्स।''

इसी प्रकार हँसी-मज़ाक़ करते हुए, वे पूरी बोतल को खाली करने के बाद गाँव की ओर चल दिए। गाँव की ओर जाने वाला रास्ता नहर के साथ-साथ चलता है। थोड़ी दूर चलने के बाद रामसिंह गीत गाने लगा, ''जरा-सा झूम लूँ मैं...।''

तीनों उसका साथ देते हुए गाते हैं, ''अरे! ना रे बाबा ना, अब तो घर चलना है।'' और चारों खिलखिला कर हँसने लगते हैं।

कुछ दूर चलने के बाद, रामसिंह ने कहा, ''कितनी उमस है? पसीने ने हाल बेहाल कर रखा है। क्यों न थोड़ी देर तैरने का आनन्द लें?''

''नहीं यार, बहुत देर हो चुकी है। घरवालों को चिंता हो रही होगी। तुम घर जाकर नहा लेना।'' जयराम ने कहा।

''क्या घर में नहाने और तैरने का मजा बराबर होता है?''रामसिंह ने जयराम से प्रश्न किया।

''तैरने का मजा कल दिन में ले लेना। वैसे भी अंधेरे मे तैरना ठीक नहीं होता।'' जयराम ने रामसिंह से कहा।

''तू शेर को डराना चाहता है? मैं तेरी तरह डरपोक नहीं हूँ। अपनी मर्जी का मालिक हूँ। जो मन में आता है, वही करता हूँ। तुम्हें जाना है तो जाओ।'' रामसिंह ने तैश में आते हुए कहा।

तभी कोतरी बोलते हुए उनके ऊपर मंडराई।

''ठहर साली अशुभ, अभी मज़ा चखाता हूँ।'' रामसिंह ने पत्थर उसकी और फेंकते हुए कहा।

''साली मारने के लिए नहीं, प्यार करने के लिए होती है।'' कहते हुए कालूराम हँसने लगा। जयराम और दयाकिशन भी हँसने लगे।

''साला, दिमाग गरम हो गया है। इसे ठंडा करने के लिए तैरना ज़रूरी हो गया है। थोड़ी देर रुको मैं इसे अभी ठंडा करके आता हूँ।'' रामसिंह ने झेंप मिटाने के लिए कहा।

''रामसिंह! रात ज़्यादा हो गई है, घरवाले चिंता कर रहे होंगे?'' दयाकिशन ने कहा।

उपन्यास पूरा पढ़ने के लिए अभी ख़रीदें-